2

पिता के साथ सहभागिता

1 यूहन्ना के पांच अध्यायों में हमें मसीही विश्वास की प्रमुख शिक्षाओं में से कुछ की प्रस्तुति मिलती है। यूहन्ना ने इन शिक्षाओं को बार-बार ताल मिलाने में संगीतमय कोरस (स्थाई) को दोहराने की तरह लिखा।

ताल को लिखने का यूहन्ना का उद्देश्य मसीही लोगों को अपने सम्बोधन में कही बात को मिलाना था। उन शिक्षाओं की सच्चाई पर ज़ोर देते हुए जिन्हें उन्होंने स्वीकार किया था, उसने उन्हें झूठी शिक्षा देने वालों के प्रति चौकस किया। यूहन्ना ने उन्हें उनके उद्धार के बारे में आश्वस्त किया और उन्हें धार्मिकता से जीवन बिताने का आग्रह किया। यह सब करते हुए उसने मसीही धर्म की कुछ बड़ी सच्चाइयों पर ज़ोर दिया।

एक बार में एक अध्याय का अध्ययन करते हुए इस पत्री को नज़दीकी से देखने पर हम उन में से कुछ सच्चाइयों का पता चलेगा। प्रत्येक पाठ में हम अध्याय के लिए सुझाया गया विषय चुनेंगे। उस विषय के बारे में हम यूहन्ना की बात की समीक्षा करेंगे-न केवल उस अध्याय में बल्कि पूरी पुस्तक में भी।

अध्याय 1 में हम मसीही व्यक्ति की ''पिता के साथ सहभागिता[1] ...'' के बारे में पढ़ते हैं। यूहन्ना ने लिखा:

> जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है (आयत 3)।

हम (1) ऐसी सहभागिता की आवश्यकता, (2) उस सहभागिता को पाने और बनाए रखने के साधनों, और (3) परमेश्वर के साथ सहभागिता होने के प्रतिफलों का अध्ययन करना चाहते हैं।

परमेश्वर के साथ सहभागिता की आवश्यकता

आइए यह पूछते हुए कि ''हमें पिता के साथ सहभागिता करने की इच्छा क्यों करनी चाहिए?'' सहभागिता की आवश्यकता पर विचार करते हैं। इसका उत्तर परमेश्वर के स्वभाव में है, जिसकी हम आराधना करते हैं।

अन्य देवताओं के साथ मनुष्यजाति का सम्बन्ध

विभिन्न समाजों में लोग हमेशा से किसी न किसी तरह के देवता या देवताओं की पूजा करते रहे हैं। अपने देवता या देवताओं के साथ उनका जवाब और सम्बन्ध हमेशा इस बात पर निर्भर रहा है कि उन देवताओं को कैसे देखा जाता था।

प्रकृति देवता। कुछ लोग प्रकृति के कथनों को ईश्वरीयता से मिलाते हैं। एक अर्थ में उनके देवता सूर्य और वर्षा और नदियां हैं। वे ऐसे देवताओं से उन्हें आशीष देने के लिए उनके सामने

बलिदान भेंट करना अपनी जिम्मेदारी समझते हैं।

आत्मा के देवता। कुछ लोग आत्मा के देवताओं में विश्वास रखते हैं, जिनमें सांसारिक बातें होती हैं। हर वृक्ष या झाड़ी में आत्मा मानी जाती है, जिसका मनुष्य को ध्यान रखना चाहिए कि उसे ठोकर न लगे। ये आत्माएं परोपकारी होने के बजाय अपकारी अधिक होती हैं इसलिए उन्हें मानने वालों के लिए उन्हें प्रसन्न करने का रहने का ध्यान रखना आवश्यक है।

यूनानी और रोमी देवता। प्राचीन यूनानी और रोमी लोग आत्मिक देवताओं में विश्वास रखते थे, जो स्वर्ग से नीचे को देखते और कई बार लोगों के मामलों में हस्तक्षेप करते थे। वे देवता मौजी होते थे। यानी कई बार उन्हें सहायता करने वाले कहा जाता था और कई बार उन्हें मनुष्यों को हानि पहुंचाने वाले माना जाता था। लोग उनका सामर्थ पाने और उनके क्रोध से बचने, उनके साथ सौदा करने, यहां तक कि उन्हें धोखा देने की कोशिश करते थे।

हिन्दू धर्म। हिन्दू लोग सैकड़ों हज़ारों देवताओं में विश्वास रखते हैं, परन्तु अन्त में उनका विश्वास सबके ऊपर एक जीव में है। हिन्दू व्यक्ति का लक्ष्य उस देवता के साथ मिल जाना है जो सब कुछ बनाता है और इस प्रकार उसका अंश बनकर अपनी पहचान खो देना है।

यहोवा परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्धः उसकी सहभागिता की इच्छा करना

कुछ इसी तरह से हमारा सम्बन्ध यहोवा परमेश्वर से अर्थात बाइबल के परमेश्वर से उस आधार पर है, जैसा वह है। वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापक, सर्वपवित्र और कुल मिलाकर धर्मी है। वह व्यक्तिगत, प्रेम करने वाला, अनुग्रहकारी और दयालु भी है। जब लोगों को पता चल जाता है कि परमेश्वर कैसा है, तो उनका उत्तर उसे लुभाने या उसके क्रोध से बचने के लिए नहीं होता, या नहीं होना चाहिए। परमेश्वर के साथ सौदा करना नहीं बल्कि उसके निकट आना उसे सही जवाब है।

मूर्तियों की पूजा करने वाले अथेने के लोगों को पौलुस ने इसी परमेश्वर के बारे में बताया था। जिसने सब कुछ बनाया और मनुष्यों को पृथ्वी पर इसलिए रखा ताकि ''वे परमेश्वर को ढूंढें, कदाचित उसे टटोल कर पा जाएं तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं! क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:27, 28क)। जो लोग यहोवा परमेश्वर को जानते हैं वे उसकी खोज करते हैं!

वास्तव में यह पता होना कि यहोवा परमेश्वर कैसा है उसके लिए हमारे अन्दर भूख अर्थात उसके साथ रहने की इच्छा, उसकी उपस्थिति में होने की तड़प पैदा कर सकती है और करनी चाहिए। ऐसी तड़प को भजन लिखने वाले ने व्यक्त किया था, जब उसने लिखा:

> जैसे हरिणी नदी के जल के लिए हांफती है,
> वैसे ही, हे परमेश्वर, मैं तेरे लिए हांफता हूं।
> जीवते ईश्वर परमेश्वर का मैं प्यासा हूं (भजन संहिता 42:1, 2क)।

अपने कुछ भजनों में हम परमेश्वर के निकट होने की ऐसी ही इच्छा व्यक्त करते हैं। हम गाते हैं:

पास तेरे, ऐ खुदा, हां, तेरे पास!

गरचे सलीब की राह करे उदास
तौभी मैं गाऊंगा, पास तेरे ऐ ख़ुदा,
पास तेरे, ऐ ख़ुदा, हां, तेरे पास![2]

एक उदाहरण: परमेश्वर के लिए हमारी आवश्यकता और इच्छा

शायद परमेश्वर के लिए हमारी आवश्यकता और इस बात को कि उसके साथ सहभागिता करने की हमें इच्छा क्यों करनी चाहिए को एक उदाहरण के द्वारा बढ़िया ढंग से समझाया जा सकता है। कल्पना करें कि आप किसी गांव में बीमार अनाथ बालक हैं। आपकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है; आप वही खाकर गुज़ारा करते हैं, जो दूसरे लोग फैंक देते हैं और जहां जगह मिले आप वहां सो जाते हैं। आपको हर कोई निकाल देता है और तुच्छ समझता है।

कल्पना करें कि कबीले का सरदार लोगों में सबसे महान है–शारीरिक रूप से मज़बूत, सुडौल, बहुत धनी, बुद्धिमान और भला है। आपको वे सब बातें पता हैं; परन्तु इससे आपको कुछ लाभ नहीं होता क्योंकि आप कुछ नहीं हैं। आपकी ऐसे बड़े और भले आदमी तक पहुंच नहीं है।

फिर, एक दिन वह सरदार आपके गांव में घूम रहा है। उसका ध्यान आप पर पड़ता है और वह आपको बुला लेता है। आप कांपते हुए उसके पास जाते हैं। वह आपके हालात पर आपसे बात करता है। दूसरे लोग बताते हैं कि आप एक अनाथ, बीमार हैं, जो मरने के कगार पर है और किसी काम का नहीं। तौभी वह आपको गोदी में उठाता और अपने घर ले जाता है, आपकी बीमारी का इलाज़ करता है, आपको स्वस्थ होने में सहायता करता है, आपको अपना बच्चा बना लेता है और अपनी सम्पत्ति का वारिस बना लेता है। आपको कैसा लगेगा? कुछ न होना कैसा लगेगा, परन्तु फिर किसी ऐसे व्यक्ति के साथ मिल जाना जिसके पास सब कुछ है–उसके द्वारा गले लगाना, प्रेम किया जाना, चंगाई देना और उसके द्वारा देखभाल किया जाना? यदि आप वह अनाथ बालक होते तो क्या आपको ऐसे व्यक्ति से मिलने की तड़प न होती?

वह कहानी हमारी स्थिति के जैसी ही है। हम सब उस अनाथ बालक की तरह हैं–बिना आशा या सहायता के पापी, पाप के रोग से मरने के निकट बीमार, कोई हमारी देखभाल करने वाला नहीं है, स्पष्टतया बेकार और किसी काम के नहीं। परन्तु हमें परमेश्वर द्वारा गले लगाने और शांति देने, अपने घराने का भाग बना लेने, उसके द्वारा प्रेम किए जाने और उसकी आशिषों और भरपूरी में से पाने का अवसर है जिसके पास सब कुछ है! इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उसके साथ सहभागिता कर सकते हैं जो हमें पूरी तरह से जानता है, परन्तु फिर भी हम से प्रेम करता है और सदा तक हमारे साथ रहने और हमारी देखभाल करने की प्रतिज्ञा करता है! तो फिर हम क्यों नहीं चाहेंगे। वास्तव में हम तो परमेश्वर के निकट होना संसार की किसी भी और बात से अधिक चाहते हैं? कोई पिता के साथ सहभागिता पाने के अवसर को नज़रअन्दाज क्यों करेगा? हमारा परमेश्वर महान है और हमारा परमेश्वर प्रेम करने वाला है। हम उससे पीछे नहीं हटते या उससे छिपते नहीं हैं बल्कि हम उसके साथ अब और हमेशा तक रहने की तलाश में हैं।

1 यूहन्ना में पिता के साथ सहभागिता

क्या किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ पाना जो उसकी तलाश में हो और उसके साथ निजी

सम्बन्ध बनाना चाहता हो सम्भव है ? यूहन्ना ने ज़ोरदार ढंग से दावा किया कि ऐसा ही है ! उसने अपनी पहली पत्री न केवल यह कहते हुए आरम्भ की कि हम ''पिता के साथ सहभागिता'' रख सकते हैं (1:3) बल्कि उसने पूरी पत्री में उस सहभागिता पर ज़ोर भी दिया। उसने कई तरह से परमेश्वर के साथ निकट सम्बन्ध होने की बात की।

कई बार पिता के साथ हमारी सहभागिता को उसे *जानने* के रूप में बताया गया है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना ने लिखा, ''यदि हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे, तो इससे हम जान लेंगे कि हम उसे जान गए हैं'' (1 यूहन्ना 2:3; देखें आयतें 4:5)।[3] कई बार इसे परमेश्वर *में होने* (1 यूहन्ना 2:5; 5:20) या उसके हम में *होने* के रूप में (1 यूहन्ना 4:4) बताया गया है। कई बार मसीही लोगों को *''परमेश्वर के ''*होने (1 यूहन्ना 4:6), *''परमेश्वर से''*होने (1 यूहन्ना 5:19) या *''परमेश्वर से जन्मे''*होने (1 यूहन्ना 4:7; 1 यूहन्ना 5:1, 4, 18) के रूप में बताया गया है। हमें *''परमेश्वर की संतान''* कहा गया है (1 यूहन्ना 3:1, 2, 10)। यूहन्ना ने यह भी कहा, ''जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी हैं'' (1 यूहन्ना 4:17ख)।

परन्तु परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता के वर्णन के लिए आम तौर पर इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति ''में वास करना'' वाक्यांश है। पूरी पत्री में यूहन्ना ने ज़ोर दिया कि पिता के साथ हमारी सहभागिता इसमें है कि हम उसमें वास करते हैं और वह हम में वास करता है। उदाहरण के लिए हम पढ़ते हैं:

> जो कुछ तुमने आरम्भ से सुना है वही तुम में बना रहे: जो तुम ने आरम्भ में सुना है, यदि वह तुम में बना रहे, तो तुम भी पुत्र में, और पिता में बने रहोगे (1 यूहन्ना 2:24)।[4]

इन सभी वचनों से हम सीखते हैं कि पिता के साथ सहभागिता रखना अर्थात परमेश्वर में वास करना, बने रहना और हमारे अन्दर परमेश्वर का वास या बना रहना सम्भव है। जीवन में कई बातें अनिश्चित होती हैं, परन्तु हम इस बात में पक्का जान सकते हैं कि परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता हो सकती है !

शायद हमें इस तथ्य पर और ज़ोर देने की आवश्यकता है। हम परमेश्वर के विषय में कैसे सोचते हैं ? परमेश्वर एक राजा है और हमें उसकी आज्ञा माननी आवश्यकता है; परन्तु परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में इससे बढ़कर भी कुछ है। हम परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध को आर्थिक प्रबन्ध की एक किस्म के रूप में देख सकते हैं: बोलने के एक ढंग में, परमेश्वर हमें कुछ अर्थात उद्धार, अनन्त जीवन देता है और बदले में जो हम उसे देते हैं वह निष्ठा और आज्ञापालन है। परन्तु परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध में इससे बढ़कर भी कुछ है। जब तक हम पिता के साथ निकट से सहभागिता, व्यक्तिगत सम्बन्ध, निकट सम्बन्ध, निरन्तर संगति और लाभकारी मित्रता पाने की सम्भावना को नहीं देखते तब तक परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध उतना संतोषजनक नहीं हो सकता जितना होना चाहिए।

सहभागिता के ढंग

पिता के साथ हमारी सहभागिता कैसे पाई जा सकती है और फिर बनाई रखी जा सकती है ?

सहभागिता पाना

आरम्भ में हम पिता के साथ सहभागिता कैसे करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर अध्याय 1 की आरम्भिक कुछ आयतों में संकेत मिलता है[5]:

> [1]उस जीवन के वचन के विषय में जो आदि से था, जिसे हमने सुना, और जिसे अपनी आंखों से देखा, बरन जिसे हम ने ध्यान से देखा; और हाथों से छुआ। [2] (यह जीवन प्रगट हुआ, और हमने उसे देखा, और उसकी गवाही देते हैं, और तुम्हें उस अनन्त जीवन का समाचार देते हैं, जो पिता के साथ था, और हम पर प्रगट हुआ।) [3]जो कुछ हमने देखा और सुना है उसका समाचार तुम्हें भी देते हैं, इसलिए कि तुम भी हमारे साथ सहभागी हो; और हमारी यह सहभागिता पिता के साथ, और उसके पुत्र यीशु मसीह के साथ है। [4]और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं, कि हमारा आनन्द पूरा हो जाए।

''उस'' शब्द (आयत 1) वाक्य में पहले शब्द अर्थात यूनानी शब्द *ho* (हो) का अनुवाद एक आक्रमक, सदृश सर्वनाम शब्द है। यूहन्ना ने ''जिसे हम ने सुना,'' ''देखा,'' ''ध्यान से देखा,'' और ''छुआ'' बोलते हुए जारी रखा इसलिए यह विश्वास करना तर्कसंगत लगता है कि वह यीशु की बात ही कर रहा था। वह यीशु की बात करने के लिए पुरुषवाचक के बजाय जातिवाचक सर्वनाम का इस्तेमाल क्यों करता? कुछ टीकाकारों का मानना है कि यूहन्ना यीशु पर उसके व्यक्ति होने के बजाय संदेश पर ज़ोर दे रहा था।[6] अन्य टीकाकरों ने यह बताया है कि यूहन्ना मसीह की बात केवल व्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि ''वचन'' के रूप में यीशु को दिखा रहा था।[7] परन्तु ''मूल पाठकों को विषय को परमेश्वर के पुत्र अर्थात यीशु मसीह के रूप में पहचानने में कोई कठिनाई नहीं होगी'' (आयत 3)।[8]

1:1–4 में यूहन्ना ने इस पत्र के विषयों में से एक का सुझाव दिया कि यीशु मसीह वास्तव में शरीर में आया था। झूठी शिक्षा देने वालों द्वारा जो यूहन्ना के पाठकों को परेशान कर रहे थे इस तथ्य का इनकार किया जाता था (1 यूहन्ना 2:18–23; 4:1–3)। यूहन्ना ने यह कहते हुए यीशु के मनुष्य होने की वास्तविकता पर ज़ोर दिया कि उसने और अन्य प्रेरितों ने यीशु को अपने कानों से सुना, अपनी आंखों से देखा और अपने हाथों से स्पर्श किया है। यीशु मसीह एक वास्तविक मनुष्य अर्थात सचमुच में शारीरिक देह में था!

इसी यीशु मसीह के द्वारा, पिता के साथ हमारी सहभागिता है क्योंकि हमारा उद्धार उसी के द्वारा हुआ है। यूहन्ना ने कहा कि परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र को संसार में भेजा ''कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं'' (1 यूहन्ना 4:9) और ताकि वह ''हमारे पापों का प्रायश्चित्त'' (1 यूहन्ना 4:10) उसने यह भी लिखा कि परमेश्वर ने ''पुत्र को जगत का उद्धारकर्त्ता करके भेजा'' (1 यूहन्ना 4:14)।

हम उस उद्धार को जिसे लेकर यीशु आया कैसे पा सकते हैं? मसीह में विश्वास के द्वारा। हम पढ़ते हैं, ''जिसका यह विश्वास है कि यीशु ही मसीह है, वह परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है'' (1 यूहन्ना 5:1क; देखें 3:23); ''जो कोई यह मान लेता है, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; परमेश्वर उसमें बना रहता है, और वह परमेश्वर में'' (1 यूहन्ना 4:15)।

मसीह में विश्वास स्वयं हमें परमेश्वर के साथ सहभागिता में नहीं ले जाता। गलातियों

3:26 कहता है कि हम ''उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान'' हैं। और अगली आयत कहती है, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:27)। विश्वास करने और मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करने के बाद हमारे लिए मसीह में बपतिस्मा लेना आवश्यक है। जब हम बपतिस्मा ले लेते हैं तो हम परमेश्वर की संतान बन जाते हैं। यहां पर हमारी सहभागिता परमेश्वर के साथ, मसीह के साथ और परमेश्वर के अन्य बच्चों के साथ होती है।

सहभागिता बनाए रखना

परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा पिता और उसके पुत्र के साथ सहभागिता बनने के बाद, उसे बनाए रखा कैसे जा सकता है? मसीही लोग उस सहभागिता में कैसे बने रह सकते हैं? अध्याय 1 का शेष इसी विषय पर है:

> [5]जो समाचार हम ने उससे सुना, और तुम्हें सुनाते हैं, यह वह है; कि परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अन्धकार नहीं। [6]यदि हम कहें, कि उसके साथ हमारी सहभागिता है, और फिर अन्धकार में चलें, तो हम झूठे हैं: और सत्य पर नहीं चलते। [7]पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक दूसरे से सहभागिता रखते है; और उसके पुत्र यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है। [8]यदि हम कहें, कि हममें कुछ भी पाप नहीं, तो अपने आपको धोखा देते हैं: और हममें सत्य नहीं। [9]यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। [10]यदि कहें कि हमने पाप नहीं किया तो झूठा ठहराते हैं, और उसका वचन हम में नहीं है।

इन आयतों में हम देखते हैं कि एक-दूसरे के लिए प्रेम,[9] परमेश्वर की आज्ञाकारिता[10] और सच्चाई में बने रहना परमेश्वर के साथ सहभागिता में सब की आवश्यकता है।[11] परन्तु परमेश्वर के साथ सहभागिता में बने रहने के लिए 1 यूहन्ना 1:5-10 में बनाई गई शर्त है कि ''जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें'' (1 यूहन्ना 1:7)। ज्योति में चलने का क्या अर्थ है? इसका अर्थ पूरी कोशिश से धार्मिकता में बने रहना, परमेश्वर की नकल करना और परमेश्वर की इच्छा उसके वचन को मानकर पूरी करने की कोशिश करना है, जो ''मेरे पांव के लिए दीपक'' है (भजन संहिता 119:105)।[12]

स्पष्टतया कुछ लोगों का मानना है कि वे पाप में रह सकते हैं (''अंधकार में चलना'') और इसके बावजूद परमेश्वर के साथ संगति रख सकते हैं (1 यूहन्ना 1:6)। यूहन्ना ने कहा कि ऐसा होना मुमकिन नहीं है, क्योंकि ''परमेश्वर ज्योति है: और उसमें कुछ भी अंधकार नहीं'' (1 यूहन्ना 1:5)। क्या कोई व्यक्ति पाप में बने रहकर पूरी तरह से पवित्र परमेश्वर के साथ चल सकता, रह सकता, और निकट सहभागिता रख सकता है? यूहन्ना का पत्र स्पष्ट कहता है कि ''नहीं!''[13]

कइयों को इस सबक की आवश्यकता है। उनके मन में परमेश्वर के नियमों के लिए कोई सम्मान नहीं है। परन्तु शैतान की विनतियों को मानकर वे पाप में बदचलनी का जीवन बिताते

हैं फिर भी जब मुश्किल में आते या सहायता की आवश्यकता होती है तो वे सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारते हैं! उन्हें ज्योति के परमेश्वर से अर्थात परमेश्वर जो ज्योति है,[14] अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर देने की उम्मीद क्यों करनी चाहिए जबकि उन्होंने अंधकार में रहने का निश्चय किया हुआ है?

इसके साथ ही हमें समझने की आवश्यकता है कि ''ज्योति में चलना'' का अर्थ यह नहीं है कि हम लोग जो मसीही हैं बिना पाप किए रहेंगे। हम सब पाप करते हैं, मसीही बनने से पहले भी और बाद में भी। यूहन्ना ने कहा कि यह कहना कि हम में ''पाप नहीं है'' या ''कोई पाप नहीं किया'' अपने आपको धोखा देना है। फिर ''हम में सत्य नहीं,'' ''हम उसे झूठा ठहराते हैं,'' और ''उसका वचन हम में नहीं है'' (1 यूहन्ना 1:8, 10)।[15] परन्तु पाप करने पर हमें अपने पाप को मानकर परमेश्वर के साथ अपनी सहभागिता को सुधार लेना आवश्यक है क्योंकि परमेश्वर वफ़ादारी से हमारे पाप को क्षमा कर देता है (1 यूहन्ना 1:9)।[16]

पिता के साथ हमें सहभागिता मसीह के द्वारा उसमें विश्वास करने से मिलती है और ज्योति में चलने से मसीह के साथ हमारी सहभागिता बनी रहती है। हम परमेश्वर के निर्देश अनुसार चलने की पूरी कोशिश करते हैं और जब नहीं चल पाते तो अपने पापों को मान लेते हैं। हमारी सहभागिता हमारी अपनी भलाई के द्वारा नहीं बल्कि मसीह के द्वारा होती है जिसका लहू निरन्तर ''हमें सब पापों से शुद्ध करता है'' (1 यूहन्ना 1:7)।

सहभागिता के प्रतिफल

परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने के क्या प्रतिफल हैं? यदि हम उस सहभागिता को प्राप्त करते या बनाए रखते हैं तो हमें क्या मिलता है? हमने पहले भी देखा है कि ज्योति में चलकर जब परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता होती है तो हम निरन्तर पापों से शुद्ध किए जाते हैं। यूहन्ना ने बताया कि यदि हम पिता के साथ सहभागिता बनाए रखें तो मसीह के वापस आने पर हमें दिलेरी हो सकती है (1 यूहन्ना 2:28)। इसके अलावा पत्री में आगे हमें यह प्रतिज्ञा मिलती है कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है (1 यूहन्ना 5:14)। हमारे प्रेमी परमेश्वर के रूप में परमेश्वर अपने बच्चों की विनतियों पर ध्यान देता है।

इसके अलावा हमें परमेश्वर के साथ सहभागिता होने के कारण मिलने वाली एक और आशीष का पता चलता है। आयत 7 पर ध्यान दें: ''पर यदि जैसा वह ज्योति में है, वैसे ही हम भी ज्योति में चलें, तो एक-दूसरे से सहभागिता रखते हैं, और उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' ज्योति में चलकर न केवल परमेश्वर के साथ हमारी सहभागिता होती है और न केवल ज्योति में चलने से हमें पापों की क्षमा मिलती है बल्कि जब हम ज्योति में चलते हैं तो हमारी ''एक दूसरे से सहभागिता'' भी होती है। परमेश्वर के साथ सहभागिता का आनन्द लेते हुए हम अन्य चेलों के साथ भी सहभागिता का आनन्द ले सकते हैं। यह तथ्य इस बात को प्रगट करता है परमेश्वर के साथ हमारी निकट सहभागिता न तो निजी अर्थात अकेले की बात है और न थी और न होनी थी।

हम सहभागिता को जिसमें किसी व्यक्ति के साथ नज़दीकी से जुड़े हों परन्तु उस सम्बन्ध में अपने साथ दूसरों का स्वागत करने की इच्छा करने को कैसे दिखा सकते हैं? हम एक बड़े

परिवार के बारे में सोच सकते हैं जिसमें पिता और माता परिवार के हर बच्चे से प्रेम करते हैं और हर बच्चा एक-दूसरे से प्रेम करता है। ऐसे परिवार में, हर बच्चे को अपने माता-पिता से और अपने भाई बहनों से अपनापन और निकटता महसूस होती है। पिता/बच्चे के निजी, नज़दीकी सम्बन्ध कम नहीं होते बल्कि भाई बहनों के बीच संगति से बढ़ते हैं।

कलीसिया अर्थात परमेश्वर का परिवार ऐसा ही है। हर सदस्य का परमेश्वर के साथ निकट, निजी सम्बन्ध है; परन्तु हर सदस्य को परमेश्वर के परिवार में अपने भाई और बहनों के साथ निकटता का अहसास होता है। इस परिवार में द्वेष के लिए कोई जगह नहीं है, और न इस बात की चिंता कि कौन किसे पसन्द करता है। सभी बच्चे परमेश्वर से प्रेम रखने के कारण उससे जुड़े हैं और एक-दूसरे से प्रेम करते और अन्य सभी सदस्यों से जुड़े हैं। कलीसिया में मिलने वाली यह बहुमूल्य सहभागिता पिता के साथ हमारी सहभागिता होने का प्रतिफल है।

सारांश

क्या पिता के साथ सहभागिता होने के प्रतिफल मिले हैं? हां, परन्तु अपने आप में सबसे बड़ा प्रतिफल सहभागिता ही है! मसीही होने के रूप में हमारी आशा और महिमा अब भी और सदा के लिए भी अपने पिता के साथ सहभागिता और निकट सम्बन्ध होने में होनी चाहिए। हम हर दिन उसके साथ जीएं और उसके साथ रहें।

टिप्पणियां

[1]''सहभागिता'' का अनुवाद यूनानी शब्द *koinonia* से किया गया है जिसका अर्थ ''भाईचारा, सहभागिता, मिलकर बांटना'' (डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [नैशविल्ले: थॉमस नैलसन पब्लिशर्स, 1985], 233)। [2]लॉवेल मैसन, ''नीयरर, माई गॉड, टू दी,)'' *सॉन्स ऑफ़ फ़ेथ एंड प्रेज़,* संक. व संपा. अल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हावर्ड पब्लिशिंग कं., 1996)। ऐसे ही विचारों वाले अन्य भजनों में ''नीयरर, स्टिल नीयरर, बी विद मी, लॉर्ड,'' ''दो, माई एवरलास्टिंग पोर्शन'' (''क्लोज टू दी''), और ''माई गॉड एंड आई'' का हिन्दी अनुवाद शामिल हैं। [3]1 यूहन्ना की अन्य आयतें मसीही लोगों के परमेश्वर को जानने की बात करती हैं देखें 2:13, 14; 4:7, 8; 5:20. [4]1 यूहन्ना 2:6, 27, 28; 3:6, 24; 4:12, 13, 15, 16. में हमारे परमेश्वर में रहने और परमेश्वर के हम में रहने की बात भी बताई गई है। इसके अलावा यह कहने के अलावा कि हम परमेश्वर में रहते और परमेश्वर हम में रहता है, यूहन्ना ने कहा कि मसीही व्यक्ति ''ज्योति में रहता है'' (2:10) और ''उसका बीज उसमें बना रहता है'' (3:9)। दूसरी ओर यदि मसीही व्यक्ति अपने भइयों से प्रेम नहीं रखता, तो वह मृत्यु में रहता है (3:14)। यदि वह अपने भाई से घृणा करता है, तो अनन्त जीवन उसमें नहीं रहता (3:15); और यदि वह अपने भाई की सहायता करने से इनकार करता है, तो परमेश्वर का प्रेम उसमें नहीं रहता (3:17)। [5]इन आयतों को आम तौर पर 1 यूहन्ना की ''प्रस्तावना'' कहा जाता है क्योंकि वे यूहन्ना रचित सुसमाचार की प्रस्तावना से मिलती जुलती हैं (1:1-14)। [6]स्टीफन एस. स्माली, *1, 2, 3 जॉन,* वर्ल्ड बिब्लिकल कमैंट्री (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1984), 6; एफ़. एफ. ब्रूस, *दि एपिस्टल टू जॉन: इंट्रोडक्शन, एम्सपोज़िशन एंड नोट्स* (पृष्ठ नहीं: पिकरिंग एंड इंग्लिश, 1970; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 35. [7]गाय एन. वुड्स, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल्स ऑफ पीटर, जॉन एन ज्यूड* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1983), 210. [8]थॉमस एफ़. जॉनसन, *1, 2, 3 जॉन,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 25. [9]1 यूहन्ना 3:14, 15, 17; 4:8, 12, 13 भी देखें। [10]देखें 1 यूहन्ना 3:24क और 2:17ख।

[11]देखें 1 यूहन्ना 2:24. [12]ज्योति में चलने में मसीह में अपने भाइयों और बहनों से प्रेम रखना शामिल है (1 यूहन्ना 2:9-11)। [13]1 यूहन्ना 1:5-7 में पत्री के और प्रमुख विषय का परिचय दिया गया है: परमेश्वर के बालक के लिए धार्मिक जीवन व्यतीत करने अर्थात पाप करने से बचे रहने की आवश्यकता। उदाहरण के लिए देखें 1 यूहन्ना 2:1, 29; 3:6, 10. [14]आयत 7 कहती है कि ''परमेश्वर ज्योति है,'' जबकि 4:8, 16 में हम पढ़ते हैं कि ''परमेश्वर प्रेम है।'' ''परमेश्वर ज्योति है'' यानी वह कुल मिलाकर पवित्र और धर्मी है यानी उसमें कोई पाप नहीं है। ''परमेश्वर प्रेम है'' का अर्थ कि वह प्रेम करने वाला, दयालु, करुणा करने वाला और अनुग्रहकारी है। [15]टीकाकारों के अनुसार यूहन्ना उन धर्मविरोधियों पर तीन आरोप लगा रहा था जिनका वह विरोध करता था। उसने उन पर (1) परमेश्वर के साथ सहभागिता रखने के साथ साथ पाप करने के योग्य होने का दावा करने (आयत 6), (2) पाप के नियम का इनकार करने (आयत 8) और (3) यह इनकार करने का आरोप लगाया कि उन्होंने पाप किया है (आयत 10)। यूहन्ना ने इन तीनों दावों का खण्डन किया। (जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि एपिस्टल्स ऑफ़ जॉन,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960], 72-79।) [16]मसीही लोगों को अपने पापों से मन फिराना आवश्यक है (प्रेरितों 8:22)। [17]1:7 में ''चलने,'' ''रखते'' और ''शुद्ध करते'' के लिए क्रियाएं वर्तमान काल में हैं जो निरन्तर कार्य का सुझाव देती हैं: ''यदि हम ज्योति में चलें, तो ... सहभागिता रखते हैं, और ... यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।''